* सीखने का वक्र का अर्थ एवं परिभाषा *

Concept :— जब व्यक्ति किसी कार्य को सीखना आरंभ करता है तो सीखने की गति आरंभ से अन्त तक एक समान नही होती। वह किसी कौशल में शीघ्र ही प्रवीण नही हो जाता है। उसके सीखने की गति कभी तेज कभी धीमी और कभी बिलकुल रुक जाती है यदि सीखने की इस गति को एक ग्राफ पेपर पर अंकित किया जाय तो सीखने का वक्र रेखा सीखने की उन्नति या अवनति को दिखाती हुई एक वक्र रेखा बन जाती है। इसी को सीखने का वक्र रेखा कहा जाता है।

* वक्र रेखा का प्रकार :—

सीखने की वक्र रेखाए सदा एक समान नही होती है उनमें विभिन्ताएँ पायी जाती है सीखने की क्रिया में होने वाली उन्नति या अवनति के स्वरूप को समझने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने एक ~~वक्र~~ वक्र रेखाओ को तीन प्रकार बताएँ है।

① उन्नतोदर वक्र (convex curves) :—

इस प्रकार की वक्र रेखा में प्रारंभ से सीखने की गति तीव्र होती है इसके बाद सीखने की गति क्रमशः मन्द पड़ती जाती है। इस प्रकार के सीखने में प्रारंभ में उत्साह अधिक होता है।

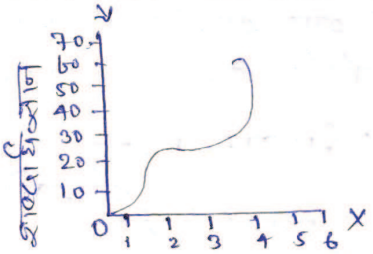

अभ्यास के दिनो का ईकाई

② नतोदर वक्र (concave curves) :—

इसमे प्रारंभ में सीखने की गति धीमी होती है और बाद में धीरे-धीरे सीखने की गति उन्नति होती है।

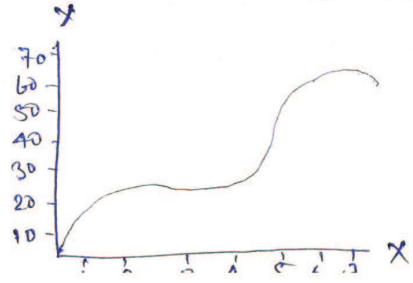

(2)

मिश्रीत वक्र रेखा (combination curves) :- यह उपर्युक्त वक्रों को मिश्रीत करता है इस वक्र रेखा में प्रारंभ में सीखने की गति धीमी उसके बाद तेज हो जाती है और लम्बे समय तक सीखने में तेजी बनी रहती है इसके बाद क्रमशः सीखने की गति फिर धीमी होने लगती है इसी प्रकार आरंभ में गति में तीव्र और बाद में कम मंद हो जाती है।

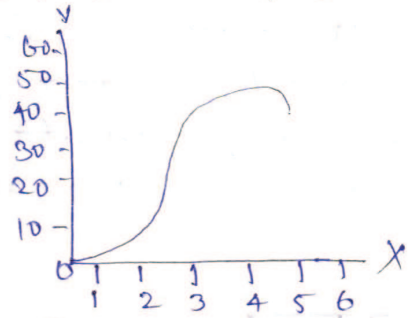

*** सीखने की वक्र की विशेषताएँ :-**

सीखने की वक्र की विशेषताएँ निम्न प्रकार से दर्शाया गया है जो कि इस प्रकार है।

⇒ अधिगम की क्रिया के प्रारंभ में तेजी दिखाई देती है किन्तु यह आवश्यक नहीं है प्रारंभ में तेजी से होने वाली प्रगति को प्रारंभिक तीव्रता कहते है।

⇒ अधिगम के वक्रो से यह स्पष्ट हो जाता है कि अधिगम में प्रगति का रूप स्थायी नही होता है अधिगम की प्रगति अनियमित रूप में होती है।

⇒ सीखने का वक्र इस बात को प्रकट करते है कि सीखने की क्रिया में एक ऐसी अवस्था या शारीरिक सीमा आ जाती है जिसके बाद व्यक्ति सीखने में कोई उन्नति नही कर पाता है।

*** सीखने के वक्र का शिक्षा में महत्व :-**

सीखने के वक्र का शिक्षा में महत्व या उपयोगिता निम्न प्रकार के है।

⇒ शिक्षक सीखने के वक्र को देखकर बालक के सामान्य प्रगति को जान सकता है।

⇒ वक्रो को देखकर शिक्षक की सामाग्री का उचित रूप से संगठन कर सकता है और उपयुक्त शिक्षक विधि द्वारा प्रयोग करके सीखने के प्रकारों को देखा जा सकता है।

* अधिगम के पठार (Plateaus of Learning)

Concept :-

यह वह स्थिति है जब सीखने की गति रुक जाती है कोई प्रगति नही होती इस प्रकार की स्थिति का अर्थ यह नही होता की अब कोई प्रगति सम्भव नही है यदि अध्यापक पठार के बनने के कारणो को नियंत्रित कर लेता है तो पुनः सीखने की गति आ जाती है।

अर्थ या परिभाषा :-

सीखने की प्रक्रिया की एक प्रमुख विशेषता पठार है जो उस अवधि को व्यक्त करता है जब सीखने की क्रिया में कोई उन्नति नही होती है। उदाहरण — बालक प्रारंभ में तीव्रता से वर्णमाला को याद करता है उसके बाद उसकी याद करने की गति धीमी पड़ जाती है कुछ समय बाद कोई नया अक्षर नही पहचान पाता है यह स्थिति कई दिनों तक बनी रहती है सीखने के वक्र में यह भाग पठार के रूप में प्रदर्शित होता है।

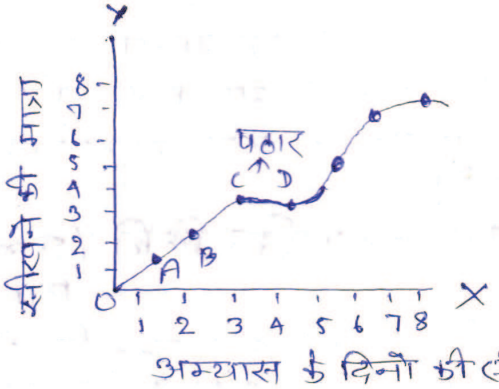

चित्र :- अधिगम के वक्र एवं उसमें पठार का रेखा चित्र प्रदर्शन है उपरोक्त रेखा चित्र से स्पष्ट हो रहा है कि प्रारंभ के तीन दिनोमे सीखने की मात्रा अधिक थी जिसे A और B बिन्दु से प्रदर्शित किया गया है B से C तक सीखने की गति धीमी हुई है। तथा C और D के मध्य पठार है D के बाद पुनः सीखने की गति आयी है।

**** अधिगम में पठार के कारण :-**

सीखने में पठारों के कई कारण हो सकते है, प्रमुख कारण निम्न है —

① ज्ञान की सीमा	④ मानसिक क्षमता तरोध
② प्रेरणा की कमी	⑤ अधिगम की अनुपयुक्त विधि
③ शारीरिक सीमा	⑥ कार्य की जटीलता

⑦ उद्देश्य का अभाव

① ज्ञान की सीमा (Knowledge of Limitation) :—

बालक अपने ज्ञान की सीमा तक किसी कार्य को बड़ी गति और कुशलता के साथ करता है। परन्तु आगे की जानकारी न होने के बाद उसकी गति धीमी होने लगती है, और फिर पठार उत्पन्न होने लगता है।

② प्रेरणा की कमी :—(Lack of motivation) :—

प्रेरणा की कमी अधिगम प्रक्रिया में उत्साह, प्रेरणा और रुचि का महत्वपूर्ण स्थान होता है यदि किसी कारण व्यक्ति का उत्साह कम हो जाता है या प्रेरणा प्रबल नहीं रहती तो भी उन्नति रुक जाती है।

③ शारीरिक सीमा (Physical Limitation) :—

शारीरिक क्षमताएँ भी अधिगम में पठार उत्पन्न करने की कारण होती है जैसे- तेज चलने या लिखने में एक सीमा ऐसी आ जाती है जिससे अधिक तेज चलना या तेज लिखना सम्भव नहीं होता है।

④ मानसिक क्षमतावरोध :— (mental Limit)

मनोवैज्ञानिको के अनुसार व्यक्ति एक निश्चित मानसिक क्षमता तक ही ~~सीमित~~ सीख सकते है प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक क्षमता अलग होती है, व्यक्ति में चाहे जितना उत्साह या व सीखने की श्रेष्ठतम पद्धति को ही क्यों न अपनाया तब अपनी मानसिक क्षमता से अधिक उन्नति नही कर पाते है।

⑤ अधिगम की अनुपयुक्त विधि (Improper of Learning method) :—

अधिगम की अनुचित विधियाँ सीखने की उन्नति को रोक कर पठार बना देती है किसी भी कार्य को करने की या सीखने की एक उपयुक्त विधि और प्रणाली होती है।

⑥ कार्य की जटीलता (complication of work) :—

जोड़कर सीखी जाने वाली सामग्री जटील नही होती है पूर्व ज्ञान से व्यक्ति उस सामग्री को पहले अर्जित किए गए ज्ञान से सरलता पूर्वक सीखने का प्रयास करता है।

⑦ उद्देश्य का अभाव (Lack of Aime) :—

पठार बनने का एक कारण उद्देश्यों का पता न होना भी है। उद्देश्य की जानकारी व्यक्ति की कार्य में रुचि पैदा करती है।

* अधिगम की पठारों का निराकरण :-

अधिगम प्रक्रिया में पठार उत्पन्न हो जाना ~~अनिवार्य~~ प्रक्रिया में परन्तु अध्यापकों को इस बात का ज्ञान होना चाहिए की पठार क्यों कब और कितने समय के लिए आया। पठार के कारणों को दूर करने से निराकरण होता है। अस्वाभाविक कारणों से निर्माण पठारों को दूर करने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना आवश्यक है —

⇒ बालक को प्रेरणा देने और बार-बार प्रोत्साहित करते रहना चाहिए।

⇒ बालकों को सीखने, लक्ष्य और शिक्षण की व्यवहारिक उपयोगिता से अवगत करा दिया जाना चाहिए।

⇒ सीखने की उत्तम और रोचक विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

⇒ बालकों में क्षमता और व्यक्तिगत विभिन्नता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

⇒ किसी कार्य को कुछ समय तक सीखने के बाद विश्राम देना चाहिए।

⇒ सीखने के नवीन वैज्ञानिक विधियों के नवीन वैज्ञानिक विधियों (कम्प्यूटर, साहित्य, शिक्षण) का प्रयोग करके बालकों को सीखने की अरुचि को समाप्त करने का प्रयास किया जा सकता है।

⇒ बालक को सीखाने में सरल से जटील की ओर के क्रम का अनुसरण करना चाहिए।

⇒ कार्य के बीच-बीच में मनोरंजन भी होता है तो सीखने में रुचि बनी रहती है।

⇒ सीखने के लिए उपयुक्त की व्याख्या की जानी चाहिए। थकान, अवधान जैसे दोषों को नियंत्रण करना चाहिए।

⇒ सीखने में पठार को रोकने के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

—: समाप्त :—